एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 03 (मई-जून, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

टपक सिंचाई विधि से खरपतवार नियंत्रण

(*आलोक कुमार एवं डॉ. रवीश चंद्रा)
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार
*संवादी लेखक का ईमेल पता: alokbijarniya001@gmail.com

खरपतवार का नियंत्रण और प्रबंधन किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। खरपतवार के कारण फसलों की क्षति होती है और किसानों की आय प्रभावित होती है। टपक सिंचाई विधि एक प्रभावी तरीका है जो खरपतवार को नियंत्रित करने में मदद करता है। इस लेख में हम टपक सिंचाई विधि से खरपतवार नियंत्रण के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

टपक सिंचाई विधि एक सिंचाई प्रणाली है जिसमें पाइप या नल के माध्यम से सिंचाई की जाती है। इस प्रणाली में पानी के निर्यात को नियंत्रित किया जाता है ताकि समय-समय पर निर्यात होता रहे। यह सिंचाई विधि उन क्षेत्रों में उपयोगी है जहां पानी की कमी होती है या उच्च बारिश वाले क्षेत्रों में जहां खरपतवार का खतरा बना रहता है।

टपक सिंचाई के लिए प्रथम चरण में एक सिंचाई नल या पाइप नेटवर्क निर्माण किया जाता है। यह नेटवर्क पानी को बागवानी क्षेत्रों या फसलों के पास ले जाता है। फिर इसे छोटे-छोटे इंटरवल में वाटर इमिटर या ड्रिप आवर्तकों से बांटा जाता है। ये इंटरवल कंप्यूटर नियंत्रित होते हैं और निर्धारित समय अंतराल पर पानी का निर्यात करते हैं। टपक सिंचाई प्रणाली में इसके लिए वाटर इमिटर का उपयोग होता हैजो प्रति सेकंड निर्धारित मात्रा में पानी को निर्यात करता है।

टपक सिंचाई प्रणाली के लाभों में से एक खरपतवार के नियंत्रण में सुगमता है। इस प्रणाली में पानी का सीधा निर्यात होने से जमीन पर खरपतवार की संभावना कम होती है। जब पानी धीरे-धीरे निकलता है तो यह जमीन को संक्रमित नहीं करता है और पौधों की जड़ों के नीचे सुरंगों तक भी पहुंच सकता है। इससे खरपतवार को सीधे असर पड़ता है और उसका नियंत्रण संभव होता है।

टपक सिंचाई विधि का दूसरा लाभ है कि यह पानी की बचत करता है। इस प्रणाली में पानी का सीधा निर्यात होने से पानी की व्यर्थ उपयोग की संभावना कम होती है। वाटर इमिटर और ड्रिप आवर्तक सिंचाई उपकरण पानी को सीधे पौधों के पास पहुंचाते हैं, जिससे पानी का निर्यात सीमित होता है और इसे पौधों द्वारा अच्छी तरह से अवशोषित किया जा सकता है।

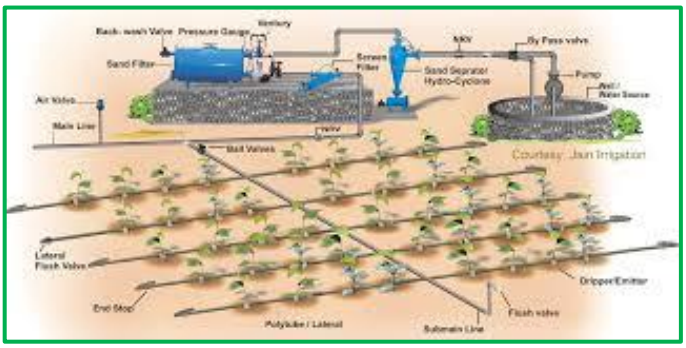

टपक सिंचाई प्रणाली का तीसरा लाभ है कि यह खरपतवार की आवश्यकता के आधार पर पानी की मात्रा नियंत्रित करता है। टपक सिंचाई विधि में पानी के निर्यात की गति, समय और मात्रा को सेट

किया जा सकता है। इसे कंप्यूटर नियंत्रित किया जाता है और इसे किसान अपनी फसलों की आवश्यकताओं के अनुसार नियंत्रित कर सकता है। इस प्रकार, किसान खरपतवार के बढ़ने के साथ-साथ पानी की भी मात्रा को नियंत्रित कर सकता है और इससे पानी की बचत होती है।

अंत में टपक सिंचाई विधि से खरपतवार नियंत्रण किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प है। यह उनकी फसलों को समय पर पानी प्रदान करता है और खरपतवार के नियंत्रण मंर मदद करता है। इसके अलावा यह पानी की बचत करता है और पानी की मात्रा को नियंत्रित करने का विकल्प प्रदान करता है। टपक सिंचाई प्रणाली का उपयोग करके किसान अपनी फसलों की देखभाल में मदद करते हुए समृद्ध और सुरक्षित फसलें उगा सकता है।

इस प्रकार टपक सिंचाई विधि से खरपतवार नियंत्रण एक प्रभावी और वातावरण मितिग्य प्रणाली है जो किसानों को उच्च उत्पादकता और पानी की बचत के साथ समृद्ध फसलें प्रदान कर सकती है।